

३
हुं न
१८

पुनीके लि जो बायो पी नसों का
नहुने सो छोडन भए ॥ नव ठाकु
पणि पनकर न हो ॥ काहे नों ॥ जो
र गोपिका न सा अ विहार करन
पी या जी नें दे खें हो ॥ नाते आपव
हन वि सा य के लज्जिन होइ के
श्री श्री याजू के प्रणय को पने ॥ अ
संन डर पाय मान हे ठाकु र ॥ ना
नें लज्जिन और डर के बसने सा
क्षान् पति पाणा दिक ना ही क
रि सक नाने ठाकु र सर्व और

देव न हो ॥ श्री याजू कहां हो ॥ कहां प
धारे हो ॥ मति कहूं अ व रथा को पा
प्र भए हैं ॥ देवो कहा कर्म भयो ॥ ए
अ व मे कहां जाऊं कहा करूं ॥ ए
सी भांति चिंता को पार ठाकु र न
पाव न भए ॥ ठाकु र संम संम ही
हरी ॥ बहन वेद क रि कह न हो ॥ सो
नें बहन ही अपया ध प र्यो ॥ अ व
मे कहा क रों श्री ॥ श्री श्री याजू हंदा
वन मे पा उ धारे हो ॥ मे न बुलाए
मे व हुन अ न आ दर की यो ॥ नाते

कोपक विपधारे ॥ अथ बहूना
लकों मेरे विरह करि कलाकर
होइगी ॥ कला जानियें के सो क
षपावत होइगी ॥ कलाइ नकी के
सीभांनि स्थिति होइगी ॥ क्यों ह
करि प्रसन्न होइ ॥ एनाइ सविधि
धचिंता ठाकुर करत है ॥ २ ॥ श्री
याजूके संहें ॥ अनिकोपक भि
देदी भुवली आरक्त ॥ अधीर को
पक वि ॥ फिर कचूं डसे देवे में
आर आरक्त नेत्र जेह करि ॥ श्री

रचंवल नेत्र करि चलन सिद्ध
लहोइ जात है ॥ एनाइ सकोपक
अथ रथाकी ॥ कोऊ अति रचना
यसुखक मलकी परम सो भाको
मेरो मन लजनाही ॥ यो न धन न
है ॥ ३ ॥ ठाकुर उदें ग विरह में संस
क्षान्त हृदय में तेवा हिर देखत भ
ए ॥ तहासन सुख कहत है ॥ जो सु
ह्यारो कृपित आरक्त दोऊ लोच
न ॥ नाके विचार में पर्यो है मेरो
मन ॥ जेसें जुगलक मलके जोडा

की नाहीं ॥ ना पर आरक्त पराग
स्नेह पूर करि आरक्त मनोहर
हो ॥ ४ ॥ तुझारी भ्रुकुटी धनुषवि
षे राख्यो जो कटाक्ष बाण ता करि
मोको उपजी जो पीडा ॥ सो मो
पेंसही न जाय ॥ नाको ओरवर
करि समाओ ॥ वही ओरवर करि
समेंगो ॥ ओरने नाहीं ॥ ५ ॥ हे सु
मुखी तुम मोको आधुनो करि
जानो ॥ ओर मोको आपुने वच
ना मृत करि सीचो ॥ ओर आपु

ने कर कमल करि मोको स्पर्श
करो मेरो गोपहरो ॥ मेरो स्वरु
पनी मीनको ॥ तुझारो करुणा
रुपी ॥ जलकी जोलहर परम
शोभायमान ॥ सो दर्शिलहर में
विहार करि वेकी इच्छा कर नहे
॥ ७ ॥ या प्रकार प्राण नाथ के क
हन ॥ अत्यंत पीनके भरके भा
र करि ॥ सिथल ठाकुर रसाल
श्री कालिंही जूके पुलनिके
नौ ननकुंजमें ॥ महा निर्मल

विमालनामंठाकुरजायवेदेन
 हांश्चकस्मात् ॥ श्रीमीयाजीकीस
 रवीकोऊ एक आइके अपनीस
 मिनीजूको ॥ ठाकुरकोकीओपु
 रदुःखसोकहतभई ॥ हेसुभजेनु
 मतोभाग्यमानगुमानीहोइ ॥ श्री
 मीयाजूनुह्यारे विरहकरिबहुन
 वेदकोंपावनहै ॥ कदाचितकहो
 जेजागर्वकरिमानवनीहोइक
 रिएसोनहीदीनतेहदीनहै ॥ ओ
 रअसंतसुकुमारहै ॥ ओरविर

हकरिखीनगातहै ॥ चंद्रकीकीर
 एहदाहकोकरतहै ॥ गानेंतोकी
 हनिंदकरतहै ॥ विविधवायुफल
 यकोंकरतहै ॥ हेप्राणनाथनुह्या
 जेनामकथनकरतहै ॥ आपुने
 देहहकीसुधिनाही ॥ देखकरिक
 हतहै ॥ जेनुह्यारेप्राणकीजीव
 तहै ॥ ओरनुह्यारीलीलाकीनीव
 चेष्टाकरतहै ॥ ओरकुंजनमेंपवे
 सकरिनुह्यारोहिनामलहतहै ॥
 अत्यंतविरहकरिमीयाजूकीअ

वस्था कहत है ॥ तब च किन होइ
के ऊ चै कू देखत है ॥ और नाडी
ष्टा नाही ॥ नाकरि उभय जी औ
हाचि नातामंडवि रही है ॥ अब नो
बहुत काल भए बोलत काल भ
बोलत हं नाही ॥ और तुह्यारो
लनदि सावि चारी स्वासो स्वास
छोडत है ॥ सो थोडो सो क छोडत है
॥ जो मनि त्रिलोकी को राह मस
नाते मंद छोडति है ॥ १० ॥ हे सुं
वय ॥ तुह्यारे विरह ने मर्म की ठेर

वात क दी है ॥ नातें मूर्छा कीं प्राप्प भ
ई है ॥ सो क्यों हु जाति नाही ॥ सो तु
ह्यारी कृपा करि जागेगी ॥ हमारै उ
पचार करि कहा होइ ॥ ११ ॥ प्री या जू
विरह दिसा मे गो ॥ चंदन अरगजा
को तो भिस करि मानत है ॥ और
चंद्रमाके किरणों और कमल
कों गो अशिसमान मानत है ॥ औ
र कंठ विषें पुष्पकी माला सो असा
खलागत है ॥ और मुक्ता फलके हा
रको महाभार करि जानत है ॥ १२ ॥

हे दीना नाथ ॥ हे दीना नाथ प्रथम
 जनु ह्यारे विरहर करि अत्यंत विरु
 ल होइ भूमि विषं लो टन हे ॥ घडी क
 में गो विलाप करत हे ॥ घडी क भेने
 रुदन करत हे ॥ ने जने आंसू चल
 न हे ॥ के सी हे प्रियाजू कमल के भू
 णार ते हं अति सुकुमार हे अंगन
 को ॥ १३ ॥ हे प्राण नाथ ॥ नु ह्यारे अ
 गं नु ह्यारी कं ए सी दुःखी क्यो वृहि
 ये ॥ प्रीयाजू दीन ते ह दीन हे ॥ सो नु
 म ही को जो अपने हृदय में अ वसि

नि हे ॥ ता ही को भाव प्राप्त को विला
 र आ पुने आ गे रा खिके ॥ आ पु
 ने आ गे आ पु नीद स मी अ व स्या
 की प्रार्थना करत हे ॥ न म स्कार क
 रिके ॥ हे प्राण नाथ ॥ याने आ गे तु
 म को कभी जनां ऊं ॥ १४ ॥ ए ना द स
 प्रियाजू पद पद विखें वार वार ए
 ही करत हे ॥ न हां क हे जो नु ह्यारे
 चरण कमल मो कं शरण हे ॥ १५
 फिर के सी हे प्रियाजू ॥ घडी क में
 रो मां च होइ आवत हे ॥ घडी क में

हु.न.
२४

नो सत्कार करनहे ॥ निपटहूष
हे ॥ बडीवार लोंकं पायमानर
हे ॥ आयेंसा तिक भाव होनहे
सुंदर वर फिर गल्यान कोण
नहे ॥ घडीकमें नेत्रसुंदी रहने
फिर अंधकारमें भटकनहे ॥ व
दीनें गिर परनहे ॥ फिरदूरलें
जानहे ॥ फिरि मूर्खी होनहे ॥ हे
कीसु धिनांही रहनहे ॥ अनिअ
नवंनहे ॥ १६ ॥ एनाइस विरह
दिसाकों प्राणभई जो पीयाजूष

समकामचर विषं ॥ एक तुझारि
अधरा मृतकरही गो जीवनसंप
नहोइगी ॥ ताते तुम हूपा रूपी
सीचनके पूर्वकरि सीचो ॥ ना
ही तो मेतुम सों कहाकरूं ॥ मे गो अ
नि शिनते हं दीनहं ॥ तुमदीनाचा
णहो ॥ अबठाकरके सेहें ॥ जो इंद
कोपनें पीडन जो ब्रजनाकों आ
पुनीलीलाकरि ब्रजकी रक्षाक
रि उझारकीनें ॥ श्रीगोवर्द्धनाच
जसिने मणी ॥ ओ श्रेष्ठनाको

सिंह करि आइ चिन होइ उरुन
कीनो ॥ सो ठाकुर वेगहीं आधि
जुकों बहन कालको विरह संगी
कोहरि करि ॥ श्री प्रिया जूके अने
कमनो रथकों सर्व ओर में परि
एकरो ॥ यह सबरीने आधि को
दीनो ॥ ॥ इति रानी यह लस
संपूर्ण ॥ ३ ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री
श्री ॥ कुंजी नि कुंज मंदि रमें
वे ठे ॥ तहां पी या जूकी सहन
री प्रति कहन हो ॥ जो में इहां ही व

सनि हो ॥ नूं जाइ कें पी या जूकों
इहां लो आव ॥ मेरी बीननी प्राण
पतिके वचन कहि वेगहीं ले आ
वों ॥ विलंब करो मनि ॥ पी या जू
के पास जाय कहियो ॥ या प्रकार
सो ठाकुर ने सार चिन करिके
कहो हे ॥ ओर सहचरी ह अनि
चतु रहे ॥ सो पी या जूके निकट
आइ के कहन भई ॥ अ वं सहचरी
ठाकुर की फिर पठाई ॥ श्री पी या
जूके पास आई कहन भई ॥ हेरा

४
दु. न.
२६

धेइहांनंदसहनंनुह्यादेविरहक
रिसांपनि क्योंहं करिक छहसु
नाही ॥ बहुननोनुह्यासोनामहे
करिविषादकरनहे ॥ अत्यंतवि
षमविरहच्यरचंदमाहकीनि
करनहे ॥ नातेनुह्यासोअत्यंतवि
ननकरनहे ॥ तुह्यासीएकानकर
आपनुमहीहोइगएहे ॥ नातेनु
ह्यासीसकलआनिपीडाकोइस
रि करेगो ॥ ठाकुरकेसेहें ॥ अपनी
ओरनुह्यासीपीडाइरि करिदनी

पीडाकोप्राप्तभएहेंओरअत्यं
नसुकुमारहें ॥ नातेदुनीपीडा
सहनकुं समर्थनाही ॥ आलीअ
धिकमेंकहाकहं ॥ ३ ॥ जबपुकार
करिकहनहे ॥ जोहेपीये ॥ तुह्या
रोनामलेकरिबुलावनहे ॥
नवहंकरकरिपूछनहेजोनंद
सनुंआए ॥ नवकरहियनुहेहांआ
ए ॥ याप्रकारआपुनीअवस्थासों
गधाहहोइगएहें ॥ याअवस्थाको
अनुसंधानकरियनुहें ॥ सखीस

हचरी कहनहैं॥ हे प्रिये॥ हमारे
पेके साम्य जेसें साईं नीलमै
स्यामहोदनामें विजुलीके गंध
कोंहरे॥ एनादसनुह्यारे अंग
सम्यपीनांवरको॥ ठाकुरजैषा
अरुछानीपरसदां सर्वदां धर
है॥ वस्तुतस्तुनो॥ श्रीचाभिना
जीकीकांतिको धरनहै॥ विरह
में जीवनार्थप्रभुजी धरनहै॥
आरक्तकांतिकरि॥ ओरऊप

रनेनुह्यारेनेत्रके अंजनकीस्यां
मकांतिकरि॥ नुह्यारेनासाधुद
कोगजमुक्ताहै॥ सोउजमगुंजा
फलसाइसहै॥ नानेंठाकुरसदां
हीयमेंगुंजाकूं धरनहै॥ नानेंवि
रहमेंजीवनसंपतिकरनहैं॥
श्रीपीयाजूप्रतिसहचरीकहन
है॥ जोकहाएसोविषमकंदर्प
वाणउत्कृष्टनापकूंसहनहै॥ च
लुआपुनेप्राणको॥ उत्कृष्टना
पकूंसहनहै॥ चलुआपुनेप्राण

पेठकों भिलि और ठाकुर के बि
ह करि नो कुं उप ज्यो हे जो मस
प ॥ नाकों समाया ॥ और ठाकुर
ह भीतर नुह्यारे वचना सुनूं
मणि नरनी कुजनादिक करि
संनोष करि ॥ और नुमह रघा नं
कोउ पाय ठाकुर के सब अंग वि
षं विल्लासकों करि हे सबी गं
॥ यह दंदाव नभे ठाकुर वेगही ॥
मेरे मन का मनानो रथकों
पूर्ण करो ॥ यह आशीर्वादीनी

सर्वीने ॥ ५ ॥ यह गानि नो भई और
निवद अधिकार ह भयो ॥ नाते हे
शि शुसु रवी तं विलंब हो दिदे और
रनी लनी वीको पर धांन करि ॥
नामें अभिसार करि ॥ प्रति पदय
ल करि नृपु रकों गं गे करि ॥ और
अंचल करि चूडी कंकणादि ही ग
रत्न भई कुंद कुल करि टां किले ॥
और वेग चलि ॥ ६ ॥ श्री ठाकुर जी
उहां भानि भानि के कुंज में विचित्र
और अस्त्रं नको मल ॥ आमादिक

के कोमल पहलव आरक्त ॥ और
जलस्थल के कमलके पुष्पकी
कोमलसुगंधसीतलपांखुश
करिकरिसुभगसोंदर्थसोंभा
वानशेय्याकीआपरचनाकर
तहें ॥ हेआलीसुभगत्यशय
निर्मलकरितुह्यारेआगमन
कुंचकिनदृष्टिकरिकेवानंवार
देखतहें ॥ ७ ॥ तुह्यारेआइवेकी
बहुनआर्त्तिसोंप्रतिरक्षकरत
हें ॥ आपुनेमनमेंमनोरथभाव

नाकरतहें ॥ श्रीप्राणापीयाद्म
साहेंचलिकरिआंवेंगीनापा
हेंमोकोमनाइवेकोंअभिनय
शुक्तदृष्टकरिमोकुंदेदेंगी ॥ ना
पाहेंआलिंगनदेकरिवहुन
कालकोंआर्त्तिउगादेगी ॥ याप्र
कारकीअसंख्यातस्त्रिंनअंग
करणभीतरअनेकसंवलिन
भावशुक्तकरतहें ॥ नवरठाकु
रतेंमूर्त्तिवंतभावशुक्तकरतहें
नवनवठाकुमनेंमूर्त्तिवंतभाव

रूपही होइ जानहे ॥ निकेवलभ
रूपही होइ जानहे ॥ निकेवलभ
रूपही ॥ ८ ॥ एनाइसरसरूप
कुरनुमको अमिसारक विबु
वनहे ॥ औरतहांसीतल संदसु
गंधवा चुबह नहे ॥ उदीपनविभ
वा ॥ याने ऊअधिक सुबहे ॥ निके
की मेंहनुमकहो कहं होतो ॥ ९ ॥
हे आत्मीनूं खेहकी शीति नो नीके
नगहे ॥ और प्राण प्रिय ठा कुरह
दयभे खेहके भरकरि आइनेअ

एही ॥ औरनुमनीके जाननही ॥
औरनुमहं ठा कुरके विरहकरि
संगमहुः रवी हो ॥ नुम जाननही
एते उपरांत हनुमनहां आइवे
कूं नोही मानत गाको हेनु भें नाहं
जानत ॥ हेक मलयकर दीर्घनेत्र
मानहकी मेंड मर्यादा हो नहे ॥ तं
नोमानिके अगाधिसमुद्रकी
मर्यादा जलें घनकीनी ॥ १० ॥ याम
कारहतीके वचनसुनिकरि के
शीषारीजूके अखंत आरक्तको

हु. न.
३१

पकसि ॥ श्रीरस्नेहकरि आसभं
करिके ॥ अंचलसोदनीकोदं
भई ॥ श्री श्री याजूकेसेहो ॥ अणं
विरहके भनकरि दीन नैदीनके
रस्नेहकरि कांपन आनके भण
नापाछेरुवेसे आधि आधेस
नइनीसोकहनभई ॥ कमलकी
खुशी गुलावके जलसोभिजाइ
अपनेउरपरत्नखनहो ॥ सोम
भारसमलजातहो ॥ ११ ॥ हेमिआ
वादनीइनीत्तयाप्रकारकृठिके

कहनहो ॥ शकुरनो जुवनिनके
जु अजु शनसो मिलिके खंद
चारी मर्यादाछांठिके जुवनिन
के विलास वसहीइगएहो ॥ इहां
तेजुवनि आवनदेननाही निन
के आधीनहोइरहो ॥ बहुतरवे
दकरि एशीजूकहनहो ॥ भलेनि
नजुवनि नवसहोइसुखे नरमो
॥ लोकहाप्राणश्रीयाके विरहकरि
नप्रथकरके सीतल अथयासुत
पीवेकोसेसेमनवांछनाकरन

५ न. ३२
हे॥ परिमनमेरो मेरे वस नहीने
मेकहाकरं॥ १३॥ हेसखीने कसे
जो ठाकुरके स्नेहको भरतु भए
हे सो तो सखीही॥ तो प्राण जण
आपुही क्यों नाही आवत॥ मो भो
मान उपासब दोषक छुनाही॥ मे
निदीषवनीहं॥ मेरी जोउपेक्षा
रंगो॥ तो मे जानूंगी जो देवविधान
मेरो अदृष्टविपरीतिहीकी जो
विरहमें ठाकुरके स्मरणमात्रे
से चंदनको सोंधो विशेष

श्रीर विविधाया गृहजराव
तही॥ और विविधमेरो मन छोड
तही॥ तो ठाकुरमेरो विकर
तही॥ प्राणपिय वेदक रि कस
तही॥ मेरो मन स्वतंत्रही॥ मेरे वस
नाही॥ तो मेकहाकरं॥ १४॥ इहांना
हीइननी बात कहत मेरो अर्द्धिना
की चंदमां ऊंचे कुं आयोग॥ तब
करे निनमानी॥ ताको पश्चात्ताप
होगभयो॥ इहां चंदमाह भीतरक
लंकको मिसुकदि॥ विभी चारणा
स्त्रीको रुदनकरत लोचनको ज

हुं न.
३३

लञ्जाञी ॥ जोकजलमुखचंद्र
परसम्यक् धरना ॥ तादसचंद्र
उदयहोनभयोहो ॥ ओस्यहवपा
वहनहो ॥ कुलटाकुलसमूहके
पकरि आरक्तकटाक्षकेसमूह
खोडने ॥ उदयसमय आरक्तके
माकोदेखकरि मीयाजरीनहो
केबहुनविलापकरतभई ॥
पश्चानापकरिकहनहो ॥ हाइ
इक्योंहाकरमोकोदृषाकर
गे ॥ अधरासुनहप्यायजिवां

जा ॥ टाकरके अंगसंगकी आस्थ
विलंबनजीवनहो ॥ यहदुनीनेमो
कोदृशाडहकाई ॥ नहानाथनुखा
रीदीनहोइकोनके शरणाजाऊं ॥
हेनाथकमानिधि ॥ तुमकरणा
सिंधुहो ॥ मेदीनहो ॥ मीनसुबेद्विन
आपुनोबदनचंद्रदिवावो ॥
भंगोयापकारविरहनापके श
करि दुःखिनहो ॥ ओरतुममेस
रणहनाहीकरना ॥ ओरतुह्मारी
विभोगामिज्यालासंयुक्तजो मेरो

मननाहुं तुममेरुदस्यभेआइं
स्यर्थाहं नाही करत ॥ भें नाही जान
नवरुधाने इहांही हो ॥ जो सबी भले
इहोइ गो ॥ याने एनाइसत्के शर्को
सहनहो ॥ नाही तो मेरो प्राण एक क्ष
णहू विलंबसहि नसको ॥ परिग्रह
कछु भलोई होइ गो जो सहनहो ॥
राकु रनो निश्चय उनस्वीनके अ
नुयाग मनहोइ रहहो ॥ ओर वेखा
हं निर्वजहोइके विहा रकरतहो ॥
वेदाकु रहू अति चतुरहो ॥ भें भोग

स आवन देतनाही ॥ जान रहें जो
करहमा रेहाथन आ वें गो ॥ अथवा
अन्यत्रहं प्रियाकी हां विलंब भ
जोहोइ गो ॥ अथवा मा र भें आवन
अनिमधु रमू निको काहने अटक
रेहोइ गो तें फिर ग एहोइ गो ॥ प
राकु रके सेहो ॥ गोपिनकी स्वीन
के नके गो अंजन रूप सो भाग्य
सावाहो ॥ ओर वज श्री भंतिनी श्री
साभिनी जीके ननके ना राकी पुत
रीहो ॥ ओर गोपकं न्याके कुच विषें

आपुलपदाइरहेहैं। और गो
न्याके आभूखनहुगदुगा।
आइरयविचारिरहेहैं। और
गोपकानके बाहलगावीचे
लंवनहोइ स्यांमनमालअ
हैं। एताइसठाकुरनुह्यारेव
रिहोइके। कल्पतरुजोठकुर
सुखदेहु। हेराधेवेगाहीहसि
ह्यारेमनवांछा। इष्टकंकोने
हआसिवादिवहसखीकथय
थयकरिसंसापुष्टयोहेसो

शिवादिगहें॥१८॥ इति श्री चतु
र्ध्रुवाससंपूर्णो॥४॥ श्री॥
कोहकष्टकरिगोया प्रकार
सो विरहदुःखकरि। विरहकोअनु
भवकरतवती। नापछेठाकुरयो
डीकलजा औरप्रणिपतिकरत
नीचेनेत्रकेअंचलकरि इक्ष्वा
खिसायकरि। नीचोदेखनसुंदर
ठाकुर। प्रातःकालविसंसुंदरव
चनचातुरी मनोहरकरि। वीन
नीकेवचनकरिनेत्रमेंअस्यंन